पढ़ना है समझना
चुन्नी
और मुन्नी

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – कृतिका एस. नरूला

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

987-81-7450-890-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन :** 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 **फोन :** 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन :** 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन :** 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन :** 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल

मुख्य व्यापार प्रबंधक : गौतम गांगुली
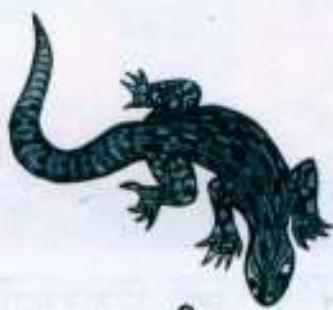
चुन्नी और मुन्नी
मुन्नी
चुन्नी
माधव
काजल

माधव और काजल के घर में दो छिपकलियाँ रहती थीं।
एक छिपकली सफ़ेद रंग की थी।
दूसरी छिपकली काले रंग की थी।
दोनों छिपकलियाँ घर की दीवारों पर चिपकी रहती थीं।

माधव और काजल को छिपकलियाँ अच्छी लगती थीं।
उन्होंने छिपकलियों के नाम भी रख दिए थे।
वे सफ़ेद छिपकली को चुन्नी कहते थे।
काली छिपकली का नाम मुन्नी था।

चुन्नी और मुन्नी पूरे घर की दीवारों पर घूमती रहती थीं।
वे एक-दूसरे के पीछे भागती रहती थीं।
वे कभी-कभी छत पर उल्टी चिपकी दिखाई देती थीं।
काजल और माधव काम छोड़कर उन्हें देखते रहते थे।

कभी-कभी चुन्नी और मुन्नी गायब हो जाती थीं।
काजल उन्हें पूरे दिन ढूँढ़ती रहती थी।
माधव भी उन्हें ढूँढ़ नहीं पाता था।
चुन्नी-मुन्नी कहीं कोने में घुस जाती थीं।

चुन्नी और मुन्नी रात को आवाज़ें निकालती थीं।
माधव को लगता जैसे वह उससे बात कर रही हों।
माधव कई बार उनसे बात करने की कोशिश करता था।
वह चुन्नी और मुन्नी की तरह आवाज़ निकालता था।

चुन्नी और मुन्नी कई बार बहुत नीचे आ जाती थीं।
वे ज़मीन पर भी दौड़ती थीं।
काजल ने उनको रसोई में भी देखा था।
वह रसोई के डिब्बों के पीछे घुस जाती थीं।

चुन्नी और मुन्नी कीड़े-मकोड़े खाती थीं।
वे अक्सर तिलचट्टे को पकड़े हुए दिखती थीं।
चुन्नी तिलचट्टे को मुँह में दबा लेती।
मुन्नी मच्छर पकड़ती और चट कर जाती।

चुन्नी एक दिन मुन्नी के पीछे भाग रही थी।
काजल को लगा कि जैसे पकड़म-पकड़ाई खेल रही हों।
मुन्नी सरपट दीवार पर भागी जा रही थी।
चुन्नी उसके पीछे-पीछे थी।

अचानक चुन्नी और मुन्नी अलग हो गईं।
काजल ने देखा कि मुन्नी की पूँछ गायब थी।
चुन्नी के मुँह में मुन्नी की पूँछ थी।
मुन्नी की पूँछ कट गई थी।

काजल ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी।
माधव दौड़कर आया।
काजल बहुत घबराई हुई थी।
उसने बताया कि चुन्नी ने मुन्नी की पूँछ खा ली।

माधव ने बिना पूँछ की मुन्नी देखी।
दोनों बहुत दुखी हो गए।
मुन्नी फिर भी इधर-उधर दौड़ रही थी।
चुन्नी कहीं छुप गई थी।

रात को माधव मुन्नी की पूँछ के बारे में सोचता रहा।
काजल भी मुन्नी की पूँछ के बारे में सोच रही थी।
दोनों को चुन्नी पर बहुत गुस्सा आ रहा था।
वे मुन्नी के बारे में बातें करते हुए सो गए।

सुबह उठते ही दोनों मुन्नी को ढूँढ़ने लगे।
मुन्नी रसोई की दीवार पर थी।
वह रोज़ की तरह मच्छर खा रही थी।
चुन्नी छत पर उल्टी चिपकी हुई थी।

काजल और माधव रोज़ मुन्नी को देखते रहते थे।
वे चुन्नी से अभी भी नाराज़ थे।
एक दिन मुन्नी बहुत नीचे आकर तिलचट्टा पकड़ रही थी।
माधव की नज़र उस पर पड़ी।

माधव ने देखा मुन्नी की नई पूँछ आ गई थी।
वह काजल को बुलाकर लाया।
काजल ने भी मुन्नी की छोटी-सी पूँछ देखी।
दोनों समझ गए कि छिपकली की नई पूँछ आ जाती है।
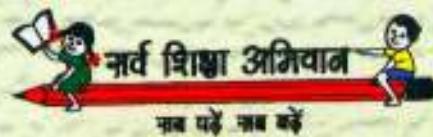
2089

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा सैट)
987-81-7450-890-4